# श्री सरस्वती चालीसा

॥ दोहा ॥

जनक जननि पद कमल रज, निज मस्तक पर धारि
।
बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि ॥
पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनंतु ।
रामसागर के पाप को, मातु तुही अब हन्तु ॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी । जय सर्वज्ञ अमर अविनासी ॥
जय जय जय वीणाकर धारी । करती सदा सुहंस सवारी ॥
रूप चतुर्भुजधारी माता । सकल विश्व अन्दर विख्याता ॥
जग में पाप बुद्धि जब होती । जबहि धर्म की फीकी ज्योती ॥
तबहि मातु ले निज अवतारा । पाप हीन करती महि तारा ॥
बाल्मीकि जी थे बहम ज्ञानी । तव प्रसाद जानै संसारा ॥
रामायण जो रचे बनाई । आदि कवी की पदवी पाई ॥
कालिदास जो भये विख्याता । तेरी कृपा दृष्टि से माता ॥
तुलसी सूर आदि विद्वाना । भये और जो ज्ञानी नाना ॥
तिन्हहिं न और रहेउ अवलम्बा । केवल कृपा आपकी अम्बा ॥
करहु कृपा सोइ मातु भवानी । दुखित दीन निज दासहि जानी ॥
पुत्र करै अपराध बहूता । तेहि न धरइ चित सुन्दर माता ॥
राखु लाज जननी अब मेरी । विनय करूं बहु भांति घनेरी ॥
मैं अनाथ तेरी अवलंबा । कृपा करउ जय जय जगदंबा ॥
मधु कैटभ जो अति बलवाना । बाहुयुद्ध विष्णू ते ठाना ॥
समर हजार पांच में घोरा । फिर भी मुख उनसे नहिं मोरा ॥
मातु सहाय भई तेहि काला । बुद्धि विपरीत करी खलहाला ॥
तेहि ते मृत्यु भई खल केरी । पुरवहु मातु मनोरथ मेरी ॥
चंड मुण्ड जो थे विख्याता । छण महुं संहारेउ तेहि माता ॥
रक्तबीज से समरथ पापी । सुर-मुनि हृदय धरा सब कांपी ॥
काटेउ सिर जिम कदली खम्बा । बार बार बिनवउं जगदंबा ॥
जग प्रसिद्ध जो शुंभ निशुंभा । छिन में बधे ताहि तू अम्बा ॥
भरत-मातु बुधि फेरेउ जाई । रामचंद्र बनवास कराई ॥

एहि विधि रावन वध तुम कीन्हा । सुर नर मुनि सब कहुं सुख दीन्हा ॥
को समरथ तव यश गुन गाना । निगम अनादि अनंत बखाना ॥
विष्णु रूद्र अज सकहिं न मारी । जिनकी हो तुम रक्षाकारी ॥
रक्त दन्तिका और शताक्षी । नाम अपार है दानव भक्षी ॥
दुर्गम काज धरा पर कीन्हा । दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥
दुर्ग आदि हरनी तू माता । कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥
नृप कोपित जो मारन चाहै । कानन में घेरे मृग नाहै ॥
सागर मध्य पोत के भंगे । अति तूफान नहिं कोऊ संगे ॥
भूत प्रेत बाधा या दुःख में । हो दरिद्र अथवा संकट में ॥
नाम जपे मंगल सब होई । संशय इसमें करइ न कोई ॥
पुत्रहीन जो आतुर भाई । सबै छांड़ि पूजें एहि माई ॥
करै पाठ नित यह चालीसा । होय पुत्र सुन्दर गुण ईसा ॥
धूपादिक नैवेद्य चढावै । संकट रहित अवश्य हो जावै ॥
भक्ति मातु की करै हमेशा । निकट न आवै ताहि कलेशा ॥
बंदी पाठ करें शत बारा । बंदी पाश दूर हो सारा ॥
करहु कृपा भवमुक्ति भवानी । मो कहं दास सदा निज जानी ॥

॥ दोहा ॥

माता सूरज कान्ति तव, अंधकार मम रूप ।
डूबन ते रक्षा करहु, परूं न मैं भव-कूप ॥
बल बुद्धि विद्या देहुं मोहि, सुनहु सरस्वति मातु ।
अधम रामसागरहिं तुम, आश्रय देउ पुनातु ॥